

## ग्रीडफ्लेशन

### प्रलिस के लयः

ग्रीडफ्लेशन, [मुद्रास्फीतः](#), अवस्फीतः, अपस्फीतः, पुनः मुद्रास्फीतः, वेज-प्राइस स्पाइरल, [आरबीआई](#)

### मेन्स के लयः

ग्रीडफ्लेशन और अर्थव्यवस्था पर इसका प्रभाव

## चर्चा में क्यों?

हाल ही में यूरोप और अमेरिका में इस वषिय पर आम सहमति बनी है कि [मुद्रास्फीतः](#) के बजाय ग्रीडफ्लेशन जीवनयापन की लागत को और बढ़ा रहा है।

- ग्रीडफ्लेशन/लालच मुद्रास्फीतः को समझने के लयः यह जानना आवश्यक है कि मुद्रास्फीतः कैसे काम करती है।

## मुद्रास्फीतः से संबंधित प्रमुख शब्दावलयः

- **मुद्रास्फीतः**
  - मुद्रास्फीतः दर है जसः पर सामान्य मूल्य स्तर बढ़ता है।
  - यद्यः बताया जाता है कि जून 2023 में मुद्रास्फीतः की दर 5% थी तो इसका मतलब है कि अर्थव्यवस्था का सामान्य मूल्य स्तर जून 2022 की तुलना में 5% अधिक था।
- **अवस्फीतः**
  - अवस्फीतः उस प्रवृत्तः को संदर्भित करती है जब मुद्रास्फीतः की दर कम हो जाती है।
  - यह उस अवधः को संदर्भित करती है जब कीमतें बढ़ रही होती हैं, लेकिन यह प्रत्येक वगित माह की तुलना में धीमी गति से बढ़ती है।
  - उदाहरणतः अप्रैल में यह 10%, मई में 7% और जून में 5% थी।
- **अपस्फीतः**
  - अपस्फीतः मुद्रास्फीतः के बलिकूल वपिरीत है। कल्पना करें कि जून 2023 में सामान्य मूल्य स्तर जून 2022 की तुलना में 5% कम था। यह अपस्फीतः है।
  - यह वस्तुओं और सेवाओं की कीमतों में एक सामान्य गतिवट है, जो आमतौर पर अर्थव्यवस्था में धन और ऋण की आपूर्तः में संकुचन से जुड़ी होती है।
- **मुद्रा संस्फीतः (Reflation):**
  - मुद्रा संस्फीतः आमतौर पर अपस्फीतः के बाद होती है क्योंकि नीति निर्माता या तो सरकारी व्यय अधिक कर और/या ब्याज दरों को कम करके आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करने का प्रयास करते हैं।

## मुद्रास्फीतः का कारणः

- **कारकः**
  - **लागतजनित मुद्रास्फीतः (Cost Push Inflation):** उत्पादन के कारकों (भूमि, पूंजी, श्रम, कच्चा माल आदि) की लागत में वृद्धि से वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि होती है।
    - उदाहरणः यदि आपूर्तः में वधितन के कारण कच्चे तेल की कीमतें रातोंरात 10% बढ़ जाती हैं, तो ऊर्जा लागत बढ़ने से सामान्य मूल्य स्तर बढ़ जाएगा।
  - **मांगजनित मुद्रास्फीतः (Demand-Pull Inflation):** मांग बढ़ने से वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि होती है।
    - उदाहरणः यदि भारतीय रिज़र्व बैंक ब्याज दरों में तेज़ी से कटौती करता है, जसःसे ब्याज दर गिरने के बाद लोग कफायती घर

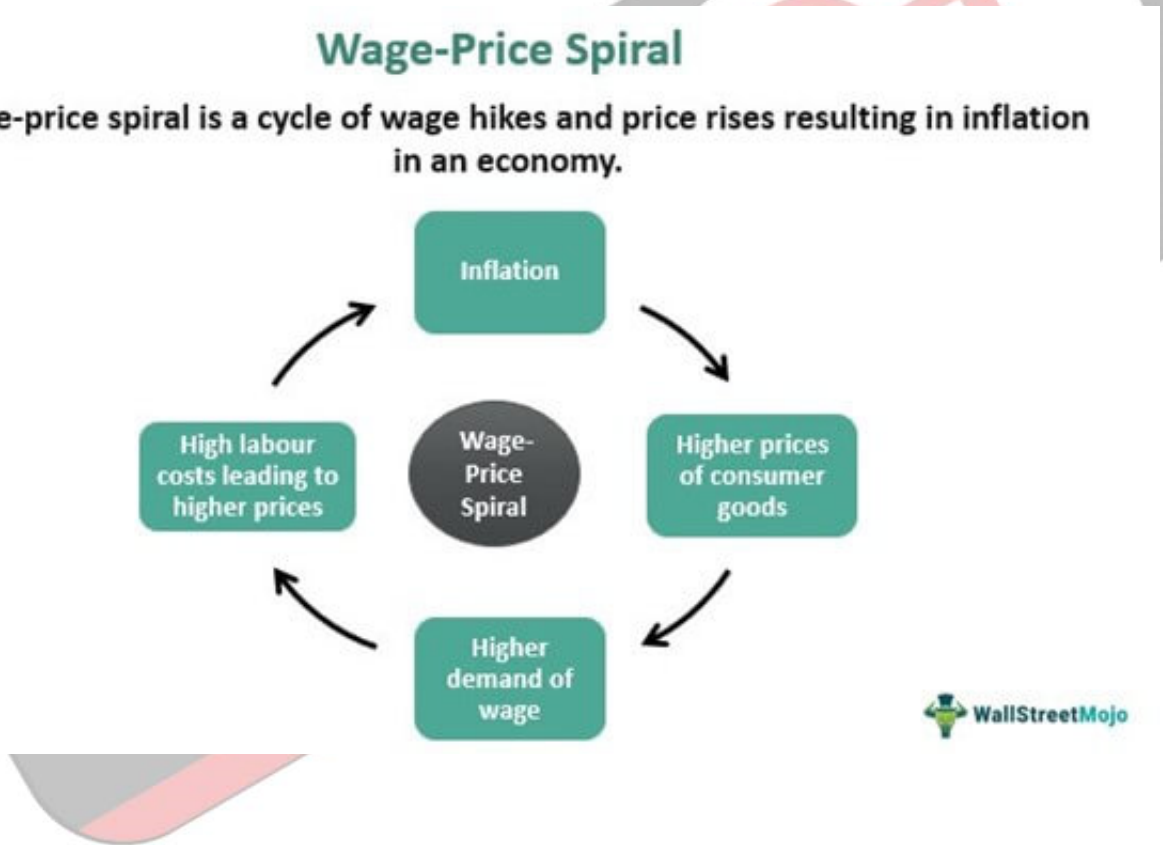
खरीद सकेंगे, तो नए घरों की मांग में अचानक वृद्धि से घर की कीमतें बढ़ जाएंगी।

#### ■ मुद्रास्फीति नियंत्रण के उपाय:

- **मौद्रिक नीति:** जब अर्थव्यवस्था में बहुत अधिक मांग होती है, तो केंद्रीय बैंक मांग को आपूर्ति के साथ संरेखित करने के लिये अपनी **मौद्रिक नीति उपाय** (संकुचनात्मक मौद्रिक नीति) के रूप में ब्याज दरों में वृद्धि करते हैं। इसी तरह यदि मुद्रास्फीति लागत दबाव से उत्पन्न होती है, तो केंद्रीय बैंक **ब्याज दरों को बढ़ाते हैं**।
  - प्राथमिक उद्देश्य मांग को नियंत्रित करना है क्योंकि केंद्रीय बैंकों के पास सीधे आपूर्ति बढ़ाने के लिये सीमिति उपकरण हैं।
  - उनका उद्देश्य वेतन-मूल्य वृद्धि को रोकना होता है, जहाँ बढ़ती कीमतें उच्च मज़दूरी, उत्पादन लागत में वृद्धि और कीमतों में वृद्धि का कारण बनती हैं।
- **राजकोषीय नीति:** यदि मुद्रास्फीति का दबाव है, तो उस स्थिति में सरकार अर्थव्यवस्था में कुल मांग में मूल्य दबाव को कम करने के लिये व्यय को कम कर सकती है या कर बढ़ा सकती है।
  - अर्थव्यवस्था को प्रभावित करने के लिये सरकारी खर्च और राजस्व संग्रह (ज़्यादातर कर, लेकिन वनिविश और ऋण जैसे गैर-कर राजस्व भी) का उपयोग **राजकोषीय नीति** के रूप में जाना जाता है।

## वेज-प्राइस स्पाइरल:

- जब कीमतों में वृद्धि होती है, तब श्रमिक उच्च मज़दूरी की मांग करते हैं, लेकिन इससे बना आपूर्ति में सुधार हुए केवल समग्र मांग में ही वृद्धि होती है।
- परणामस्वरूप मुद्रास्फीति न्यूनतम हो जाती है क्योंकि उच्च मज़दूरी से कर्य शक्ति में वृद्धि होती है, जिससे कीमतों में वृद्धि होती है।
- केंद्रीय बैंक आर्थिक गतिविधि और मांग को कम करने के लिये ब्याज दरें बढ़ाते हैं, जिसके परणामस्वरूप नौकरियाँ समाप्त हो सकती हैं। इन कमियों के बावजूद इस दृष्टिकोण का उपयोग केंद्रीय बैंकों द्वारा बढ़ती मज़दूरी तथा कीमतों के चक्र को रोकने के लिये किया जाता है, जिसे वेज-प्राइस स्पाइरल के रूप में जाना जाता है, साथ ही इसका उपयोग मुद्रास्फीति पर अंकुश लगाने के लिये किया जाता है।



## ग्रीडफ्लेशन:

#### ■ परिचय:

- **ग्रीडफ्लेशन** की स्थिति का सामान्य अर्थ नगिर्मों द्वारा लालच-प्रेरित मुद्रास्फीति में हुई वृद्धि से है। वेतन-मूल्य सर्पिल के स्थान पर यह एक **लाभ-मूल्य चक्र** है जहाँ कंपनियाँ अपनी बढ़ी हुई लागत को प्राप्त करने और साथ हीलाभ मार्जनि को अधिकतम करते हुए कीमतों में अत्यधिक वृद्धि कर मुद्रास्फीति का लाभ उठाती हैं। ये मुद्रास्फीति की स्थिति में और अधिक वृद्धि करती हैं।
  - यूरोप और अमेरिका जैसे विकसित देशों में इस बात पर आम सहमत बन रही है कि ग्रीडफ्लेशन ही इसके लिये महत्त्वपूर्ण कारक है।

#### ■ परिदृश्य:

- प्राकृतिक आपदाओं या महामारी जैसे संकटों के दौरान कीमतों में सामान्यतः वृद्धि हो जाती है क्योंकि इनपुट लागत बढ़ने के कारण व्यवसाय

कीमतें बढ़ा देते हैं।

○ हालाँकि कुछ मामलों में अधिक मूल्य वृद्धि के माध्यम से व्यापार में अत्यधिक लाभ अर्जति करके स्थितिका फायदा उठाते हैं।

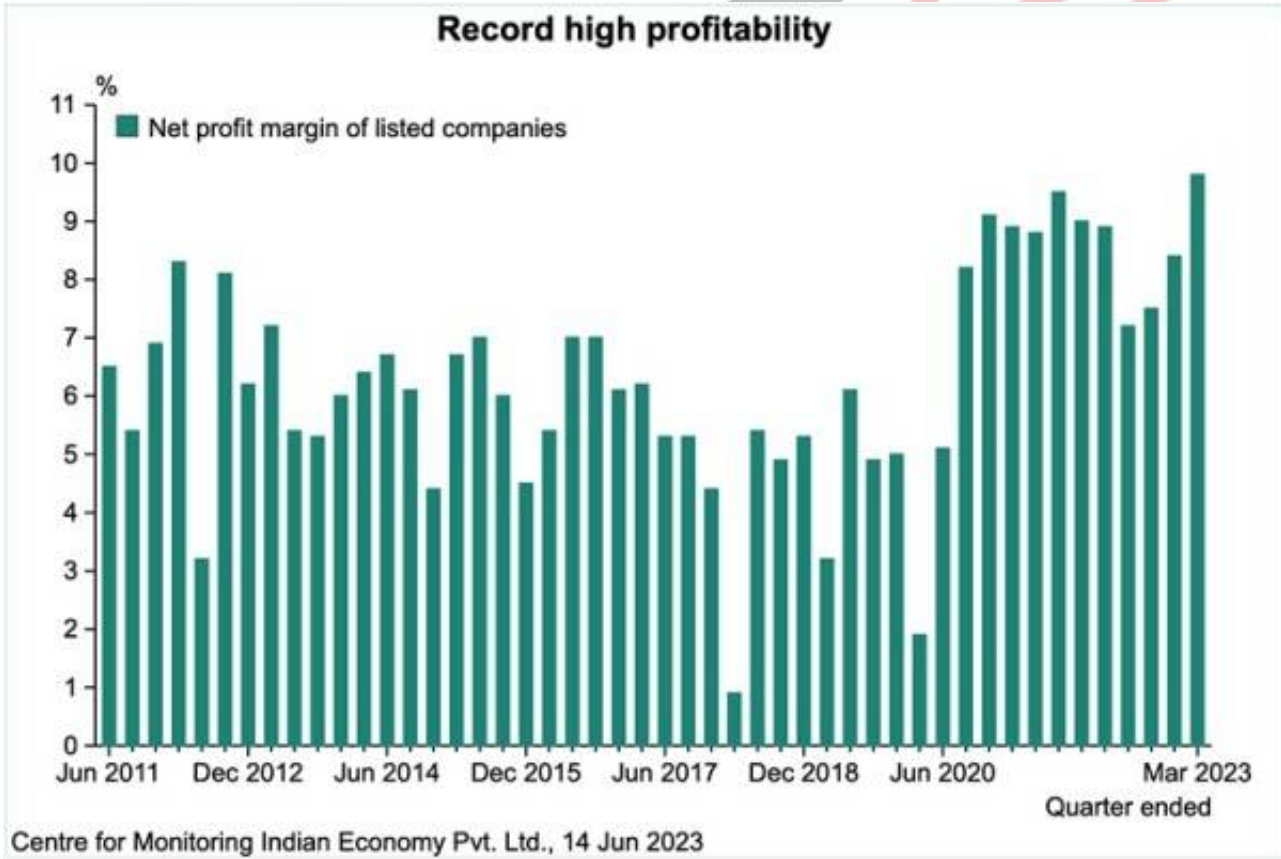
#### ■ प्रभाव:

- ग्रीडफ्लेशन कम आय और मध्यम वर्ग के व्यक्तियों पर असमान रूप से प्रभाव डालती है, यह उपभोग में कटौती कर जीवन स्तर को कम करता है।
  - जबकि यह अधिक आय और उच्च वर्ग के व्यक्तियों को उनकी संपत्तिके मूल्य में वृद्धिकरके आय असमानता को बढ़ाते हुए लाभ पहुँचाता है।
- कीमतों में अधिक वृद्धि और लालच द्वारा संचालित अनुमानों से इकोनॉमिक बबल (Economic Bubble) और अस्थिर बाज़ार की स्थिति पैदा हो सकती है। इससे वित्तीय बाज़ार दुर्घटनाओं और संकट के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं, जिससे समग्र आर्थिक स्थिरता के लिये जोखिम पैदा होता है।
- लालच से उत्पन्न मुद्रास्फीति के दबाव के परिणामस्वरूप देशों के बीच भिन्न-भिन्न नीतियाँ बन सकती हैं। प्रत्येक राष्ट्र मुद्रास्फीति से निपटने के लिये अलग-अलग रणनीतियाँ अपना सकता है, जिससे परस्पर वरिधी दृष्टिकोण सामने आ सकते हैं।
  - इससे वैश्विक असंतुलन, व्यापार तनाव और भू-राजनीतिक संघर्ष बढ़ सकते हैं क्योंकि देश प्रतिस्पर्धात्मकता की स्थिति में अपने हितों की रक्षा करना चाहते हैं।

## भारत में ग्रीडफ्लेशन:

#### ■ प्रचलन:

- सूचीबद्ध कंपनियों का नविल लाभ रिकॉर्ड उच्च स्तर पर देखा जा सकता है।
- मार्च 2023 में भारतीय सूचीबद्ध कंपनियों (4,293) का नविल लाभ बढ़कर 2.9 ट्रिलियन रुपए हो गया, जो दिसंबर 2017 से दिसंबर 2019 तक महामारी-पूर्व औसत 0.83 ट्रिलियन रुपए से 3.5 गुना अधिक है, यह महामारी के बाद असाधारण लाभ सृजन का संकेत देता है।



#### ■ ग्रीडफ्लेशन का असत्त्व:

- भारत में नविल लाभ में 60% वृद्धिका श्रेय पूरी तरह से लाभ मार्जिन में वृद्धिको दिया जा सकता है। बिक्री में वृद्धि हेतु अतिरिक्त 36% का योगदान शेष दोनों के संयोजन का परिणाम था, जो ग्रीडफ्लेशन की उपस्थितिको दर्शाता है।

## UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

प्रश्न. भारतीय अर्थव्यवस्था के संदर्भ में मांग-प्रेरति मुद्रास्फीति अथवा उसमें वृद्धि निम्नलिखित कनि कारणों से होती है? (2021)

1. वस्तितारकारी नीतियों
2. राजकोषीय प्रोत्साहन
3. मुद्रास्फीति-सूचकांकन मज़दूरी
4. उच्च कर्य शक्ति
5. बढ़ती ब्याज दर

नीचे दिये गए कूट का उपयोग कर सही उत्तर चुनिये:

- (a) केवल 1, 2 और 4
- (b) केवल 3, 4 और 5
- (c) केवल 1, 2, 3 और 5
- (d) 1, 2, 3, 4 और 5

उत्तर: (a)

प्रश्न. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये: (2020)

1. खाद्य वस्तुओं का उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) में भार उनके थोक मूल्य सूचकांक (डब्ल्यूपीआई) में दिये गए भार से अधिक है।
2. WPI सेवाओं के मूल्यों में होने वाले परिवर्तनों को नहीं पकड़ता है, जैसा कि CPI करता है।
3. भारतीय रिज़र्व बैंक ने अब मुद्रास्फीति के मुख्य मान हेतु तथा प्रमुख नीतितरि दरों के निर्धारण और परिवर्तन हेतु WPI को अपना लिया है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2
- (c) केवल 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (a)

[स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस](#)

PDF Reference URL: <https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/greedflation>